International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.245-249

हिन्दी सिनेमा का बदलता परिदृश्य और चुनौतियाँ : भविष्य का सिनेमा

सीमा खड़कवाल*

प्रस्तावना

90 के दशक में आये आार्थिक उदारीकरण और भूमण्डलीकरण ने भारतीय समाज को गहराई तक प्रभावित किया। इससे जन–जीवन में गहराई तक जुड़ा मनोरंजन का लोकप्रिय साधन सिनेमा भी अछूता नहीं रहा। हिन्दी सिनेमा में पूँजी के प्रवाह के साथ–साथ नये विमर्शों को भी स्थान मिलने लगा। हिन्दी सिनेमा में बदलाव की बयार आई। फिल्में अपने परम्परागत रूप को छोड़ कर आगे बढ़ने लगी। इसी समय भारत के विभिन्न शहरों से युवा प्रतिभाओं का हिन्दी सिनेमा में आगमन हुआ। नये और युवा निर्देशको की सृजनशील पीढ़ी नयी दृष्टि और नया विश्वास साथ लेकर आई थी। इन निर्देशकों के साथ हिन्दी सिनेमा परम्परागत तौर पर चली आ रही फिल्मी कहानियों से अलग हटकर अपनी फिल्मों में भारतीय समाज के यथार्थ को नए सिरे से पकड़ने की कोशिश करने लगा। इस प्रयास में उसने फिल्मों के विषय और किरदारों के साथ अनेक प्रयोग किए। उसने नारी की परम्परागत छवि को तोड़कर उसकी यथार्थ छवि को प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया। हिन्दी सिनेमा विकास की ओर बढ़ रहा था और अचानक कोरोना काल ने जैसे सब कुछ रोक दिया। एकाएक सब कुछ परिवर्तित हो गया। अब हिन्दी फिल्में या तो ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज हो रही है या फिर प्रदर्शन के इन्तजार में है, मल्टीप्लेक्स बन्द है। अब भारतीय दर्शक के पास सिनेमा के रूप में आज पहले से ज्यादा मनोरंजन के विकल्प मौजूद है। ऑनलाइन प्लेटफार्म पर हिन्दी फिल्में और बड़े–बड़े स्टार धराशायी हो रहे है। अब हिन्दी सिनेमा को विश्व सिनेमा, क्षेत्रीय सिनेमा एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म से कड़ी प्रतिस्पर्धा मिल रही है। बदलती स्थितियों में हिन्दी सिनेमा को अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए एक नवीन रणनीति के साथ बाजार में उतरना होगा।

सिनेमा आज भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में मनोरंजन का सर्वाधिक सुलभ, सस्ता और लोकप्रिय साधन है। भारत में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी फिल्में बनती है लेकिन सर्वाधिक फिल्में 'हिन्दुस्तानी' भाषा में मुम्बई में बनती है। मुम्बई फिल्म इंड़स्ट्री को बालीवुड भी कहा जाता है और विश्व सिनेमा में बॉलीवुड की अपनी अलग पहचान है।

भारत में सिनेमा की शुरूआत ल्यूमिएर बंधुओं की फिल्मों के 7 जुलाई सन् 1896 में बंबई (अब मुम्बई) के होटल वाट्सन में प्रीमियर के साथ हुई। ये फिल्में सिर्फ चित्रों के रूप में थी, इनमें किसी प्रकार की ध्वनि नहीं थी। लेकिन जनता के मध्य यह एक चमत्कार की तरह लोकप्रिय हो गयी । लोग इन चलती–फिरती तस्वीरों को देखकर दंग थे। सन् 1913 ई. में दादा साहब फाल्के ने 'राजा हरिश्चन्द्र' नामक मूक फिल्म का निर्माण किया। यह भारत की पहली फुल लेंथ फीचर–फिल्म थी। इसी के साथ भारतीय सिनेमा की अनवरत यात्रा आरम्भ हो गई। सन् 1931 में आर्देशिर ईरानी निर्देशित फिल्म 'आलम आरा' के प्रदर्शन के साथ ही हिन्दी सिनेमा को आवाज भी मिल गई। इसके बाद से हिन्दी सिनेमा निरन्तर विकास पथ पर बढ़ता रहा। इस दौर के फिल्मकारों ने सिनेमा को कलात्मक स्वरूप देने के लिए, उसे निखारने के लिए नये–नये प्रयोग किए है, उसी का परिणाम है कि आज हिन्दी सिनेमा ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा है। आज हिन्दी फिल्में न केवल उपमहाद्वीप में बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी देखी और सराही जा रही है। हिन्दी सिनेमा के कलाकार विशेषकर अभिनेता–अभिनेत्रियाँ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान और लोकप्रियता हासिल कर रहे है। समय परिवर्तनशील है, यह अपने साथ समाज को भी बदलता रहा है। समाज के बदलने के साथ सभी कलारूपों के कथ्य और

[6] सह आचार्य–हिन्दी, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदीकुई, दौसा, राजस्थान।

प्रस्तुति में भी परिवर्तन आता है। 21वीं सदी में तकनीकी क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से दायरे में समेट दिया है। समाज के, जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन देखे जा रहे है। इन परिवर्तनों से कला जगत विशेष रूप से सिनेमा भी अछूता नहीं रहा है। सिनेमा जगत में चाहे वह भारतीय परिदृश्य हो या वैश्विक परिदृश्य नित नए–नए प्रयोग और बदलाव देखे जा रहे है।

आज डिजिटल दौर में हिन्दी सिनेमा भी अपने विषय, शिल्प, प्रस्तुतिकरण, प्लेटफार्म और बाजार सभी स्तरों पर बदलता नजर आ रहा है और यह बदलाव उसके अस्तित्व के लिए जरूरी भी है। लेकिन इस बदलाव के साथ आज भी सिनेमा मनोरंजन के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम के रूप में अपनी जगह बनाये हुए है। हिन्दी सिनेमा में आ रहे इस बदलाव को समझने के लिए हमें पिछले दो दशकों की हिन्दी फिल्मों पर दृष्टि डालनी होगी।

जब भारत में फिल्में बननी शुरू हुई, उस समय सिनेमा में स्टूडियों सिस्टम था। इस सिस्टम के तहत नायक–नायिका, निर्देशक, कैमरामैन, तकनीशियन, संगीतकार सभी एक ही स्टूडियों में निश्चित मासिक वेतन पर फिल्मों में कार्य किया करते थे। फिर स्टूडियो सिस्टम खत्म हुआ और सभी फ्रीलांस काम करने लगे। पहले स्टूडियो मालिक यानि निर्माता–निर्देशक हावी थे लेकिन बाद में हीरो केन्द्र में आ गये। फिल्म की सफलता का सेहरा उन्ही के सिर बँधने लगा। फिल्म–इंडस्ट्री में हीरोइज्म और स्टारडम का दौर आया और यह लगातार बढ़ता गया। फिल्में और इंडस्ट्री कुछ एक नायकों के इर्द–गिर्द सिमटती चली गयी। इस दृश्य को बदला 20वीं सदी के अन्तिम दशक में भारत के छोटे शहरों एवं कस्बों से फिल्मों में काम करने के लिए आये युवा और प्रतिभाशाली कलाकारों ने और इनका साथ दिया, इन्हीं की तरह छोटी जगहों से आने वाले युवाओं ने जो फिल्मों में लेखन और निर्देशन के क्षेत्र में कार्य करने का सपना पाले हुऐ थे। इन युवा लेखको के पास प्रतिभा के साथ–साथ नई दृष्टि भी थी। जब नयी कहानी और नये तेवर के साथ ये प्रतिभाशाली अभिनेता 'हीरो' के रूप में सिनेमा के पर्दे पर आये तो हिन्दी फिल्मों का परिदृश्य ही बदल गया। मसाला फिल्मों से बोर हो चुके दर्शको ने इस बदलाव को उत्साह के साथ स्वीकार किया। कम बजट और नये चेहरो वाली इन फिल्मों की सफलता ने फिल्म इंडस्ट्री को चौंका दिया । 21वीं सदीं के आरम्भ से ही यह बदलाव आने लगा। झंकार बीट्स (2003) खोसला का घोंसला (2006), जब वी मेट (2007), ओए लकी लकी ओए (2008), ए वेडनेस डे (2008), फिराक (2009), गुलाल (2009), देव डी (2009), लव आज कल (2010), उड़ान (2010), तेरे बिन लादेन (2010), पीपली लाईव (2010), लव सेक्स और धोखा (2010), रॉक स्टार (2011), विक्की डोनर (2012), कहानी (2012), गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012), शंघाई (2012), मद्रास कैफे (2013), काय पो छे (2013), शाहिद (2013), स्पेशल26 (2013), हाइवे (2014), तमाशा (2015), मसान (2015), पीकू (2015), बेबी (2015), एम.एस.धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी (2015), दम लगा के हईशा (2015), पिंक (2016), अलीगढ़ (2016), नील बटे सन्नाटा (2016), न्यूटन (2017), बरेली की बर्फी (2017), ट्रैप्ड (2017), शादी में जरूर आना (2017), शुभ मंगल सावधान (2017), अंधाधुन (2018), बधाई हो (2018), स्त्री (2018), छिछोरे (2019), आर्टिकल 15 (2019), बाला (2019), आदि फिल्मों के माध्यम से अनुराग कश्यप, इम्तियाज अली, दिवाकर बैनर्जी, सुजीत सरकार, नीरज पाण्डे, सुजोय घोष, अभिषेक कपूर, अभिषेक चौबे, विक्रमादित्य मोटवानी, नीतेश तिवारी आदि नये निर्देशकों की पीढ़ी ने दिखा दिया कि नामचीन स्टार्स के बिना भी सिर्फ बेहतरीन कंटेंट और अभिनय के सहारे भी फिल्में बनायी और चलायी जा सकती है। हिन्दी सिनेमा के परिदृश्य को बदलने का काफी श्रेय इन निर्देशकों को ही जाता है जो अपने विजन को बेहद स्पष्ट और रचनात्मक तरीके से दर्शको के समक्ष ला रहे है। इन फिल्मों के माध्यम से उभरे मनोज वाजपेयी, राजकुमार राव, आयुष्मान खुराना, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, इरफान खान, विक्की कौशल, रणदीप शौरी, रणदीप हुड्डा आदि कंटेंट और अभिनय प्रतिभा के बल पर ही बॉलीवुड़ की गलाकाट प्रतिस्पर्धा में बिना किसी गॉडफादर के अपनी पहचान बना पाने में सफल हुए।

इन्टरनेट क्रान्ति के कारण हिन्दी सिनेमा के दर्शक की पहुँच क्षेत्रीय सिनेमा और विश्व सिनेमा तक हो गयी है। विभिन्न भाषाओं में बनी फिल्मों की डबिंग हिन्दी और अंग्रेजी में उपलब्ध होने से श्रेष्ठ, कलात्मक और मनोरंजनप्रद सिनेमा अब सुलभ है। हिन्दी सिनेमा का दर्शक अब बड़ा डिमांडिंग हो गया है। अब वह मनोरंजन के नाम पर कुछ भी स्वीकार करने को तैयार नहीं है। फिल्म में बड़े–बड़े हीरो लाकर फिल्मकार अब उसकी जेब

खाली नहीं करवा सकता। हिन्दी फिल्मों के बड़े स्टार्स को भी यह समझ में आ गया है कि यदि उन्हें दौड़ में लम्बें समय तक बने रहना है तो फॉर्मूला फिल्मों को छोडकर नये विषय, नई कहानियाँ तलाशनी होगी जो दर्शकों को खींच सके। यही कारण है कि अक्षय कुमार 'सिंह इज किंग' (2008), ओ माई गॉड (2012), जॉली एल. एल. बी.–2 (2016), टॉयलेटः एक प्रेम कथा (2017), पैडमेन (2017), केसरी (2018), मिशन मंगल (2019), में तो अजय देवगन 'सिंघम' (2011), दृश्यम (2015), गोलमाल सिक्वेल (2006से2017), रेड (2018) में नजर आये।

बॉलीवुड़ के मि. फरफेक्शनिस्ट कहे जाने कहे जाने वाले आमिर खान थ्री इडियट्स (2009), पीके (2014), दंगल (2016), सीक्रेट सुपरस्टार (2017), के जरिये दर्शको को मल्टीप्लेक्स तक लाने में कामयाब रहे। पहले हिन्दी फिल्मों की कहानियाँ हीरो को ध्यान में रखकर लिखी जाती थी, लेकिन अब कहानियाँ दर्शको को ध्यान में रखकर लिखी जारी रही है।

बदलाव का यह क्रम यहीं नहीं थमा है। इसने हिन्दी सिनेमा के स्त्री किरदारों को भी बदल दिया है। इस बदलाव को हम दो रूपों में देख सकते हैं। पहला हिन्दी सिनेमा में नायिका की परम्परागत छवि अब ध्वस्त हो रही है। फिल्मों में नायिकाएँ अब तक हीरो के साथ रोमांस करने वाली आदर्श भारतीय नारी का प्रतिरूप हुआ करती थी। उनकी इस छवि का यथार्थ से कोई मेल नहीं था। अब फिल्मों में नायिकाएँ उच्च शिक्षित, घर से बाहर अकेले रहकर अपना कॅरियर सँवारने वाली, स्वतंत्र विचारों की, अपने फैसले स्वंय लेने वाली, आत्मनिर्भर और हर परिस्थिति का साहस से सामना करने वाली जिम्मेदार आधुनिक स्त्री की यथार्थ छवि को पेश कर रहीं है।

दूसरा बदलाव नायिका प्रधान फिल्मों को लेकर भी देखा जा सकता है। सवाक सिनेमा के आरम्भ से वी. शान्ताराम और चन्दूलाल शाह ने नायिका केन्द्रित फिल्में बनाकर स्त्री–मुद्दो को उठाया था। उस दौर में वाडिया मूवीटोन द्वारा नाडिया को लेकर बनी स्टंट फिल्मों ने स्त्री–सशक्तिकरण की प्रेरणा समाज को दी। लेकिन धीरे–धीरे कामर्शियल सिनेमा ने स्त्री मुद्दो को लगभग भुला दिया और इन फिल्मों में नायिका केवल सजावटी वस्तु बन कर रह गई। यदि इस दौर की फिल्मों में नारी सम्बन्धी मुद्दे कहीं आये भी तो वे सप्रयास नही थें बल्कि अनायास या कथा के प्रवाह में आये थे। कामर्शियल सिनेमा में आजादी के बाद से 20वीं सदी के अन्त तक अंगुलियों पर गिनी जा सकने वाली नायिका केन्द्रित फिल्में बनी है। इनमें अंदाज, सुजाता, बन्दिनी, मदर इण्डिया, बिराज बहू, आँधी, एक चादर मैली सी, जूली, तवायफ, अर्थ, खून भरी मांग, फूल बने अंगारे, दामिनी, बैडिंट क्वीन, फायर, आस्था, मृत्युदण्ड़, अस्तित्व आदि है।

कॉमर्शियल सिनेमा के विपरीत कला सिनेमा या समानान्तर सिनेमा ने स्त्री–मुद्दों को उठाया और पूरी गम्भीरता के साथ, उसी यथार्थ रूप में उठाया जिस रूप में वह समाज में व्याप्त थे। वह कॉमर्शियल सिनेमा की तरह व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर स्त्री–मुद्दों को यथार्थ की चाशनी में लपेटकर प्रस्तुत नहीं कर रहा था। हालांकि समानान्तर सिनेमा में नायिका प्रधान या स्त्री मुद्दों को उठाने वाली फिल्मे बन रहीं थी और वे आलोचकों द्वारा सराही भी जा रही थी। लेकिन फिर भी वह व्यावसायिक रूप से असफल और दर्शको से दूर थी। वे कब सिनेमा के पर्दे पर आयी और चली गयी, इसका पता ही नहीं लगता था। इन फिल्मों में मण्डी, भूमिका, मिर्च–मसाला, अंकुर, माया मेम साहब, रिहाई, सुबह, इजाजत, सरदारी बेगम, मम्मों आदि प्रमुख थी।

वास्तविक जिन्दगी में स्त्री जिन समस्याओं से जूझ रही है, अब कॉमर्शियल सिनेमा नायिका प्रधान फिल्मों के जरिये उन स्त्री मुद्दों को उठाकर हिन्दी सिनेमा में स्त्री–विमर्श को स्थान दे रहा है। ये नायिका प्रधान फिल्में व्यावसायिक रूप से सफल भी हो रहीं है। पिछले दो दशको से बनी फिल्मों में लज्जा (2001), चाँदनी बार (2001), ऐतराज (2004), जब वी मेट (2007), आजा नच ले (2007), फैशन (2008), सात खून माफ (2011), नो वन किल्ड जेसिका (2011), डर्टी पिक्चर (2011), कहानी (2012), क्वीन (2014), डेढ इश्किया (2014), हाइवे (2014), गुलाब गैंग (2014), मरदानी (2014), मैरीकॉम (2014), सुपर नानी (2014), एनएच 10 (2015), पीकू (2015), पिंक (2016), नीरजा (2016), तुम्हारी सूलु (2017), टॉयलेटः एक प्रेम कथा (2017), पैडमेन (2018), राजी (2019) , मणिकर्णिका' दः क्वीन ऑफ झाँसी (2019), छपाक (2020), पंगा (2020), थप्पड़ (2020), आदि है। हीरो प्रधान बॉलीवुड में अब विद्या बालन, दीपिका पादुकोन, कंगना रानौत जैसी अभिनेत्रियों को ध्यान में रखकर

कहानियॉ लिखी जाने लगी है, यह संकेत है कि हिन्दी सिनेमा का परिदृश्य बदल रहा है। आज के दर्शक के पास मौजूदा इन्टरनेट और मोबाइल ने उसके लिए सब तरफ से फिल्मों की उपलब्धता बढ़ा दी है– शार्ट फिल्मों, टीवी पर दिखाई जाने वाली फिल्में, यूटयूब पर उपलब्ध फिल्में, डब की गई विभिन्न भाषाओं की क्षेत्रीय और विश्व फिल्में, मल्टीप्लेक्स में दिखाई जाने वाली फिल्में, डॉक्यूमेंट्री फिल्में, वेब सीरिज आदि। अब दर्शक फिल्म देखने के मामले में काफी समझदार हो गया है। जो कंटेट उसे पसन्द आयेगा, उसी को वह देखेगा अन्यथा उसके पास फिल्म को बीच में छोड़ देने का भी विकल्प है। दर्शकों की रूचि को ध्यान में रखकर ही फिल्मकार नयी कहानियों की तलाश कर रहे है। इसी तलाश में फिल्मकारों का ध्यान विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्तियों की बायोग्राफी की तरफ गया है। और दर्शकों को हिन्दी सिनेमा में एक से बढ़कर एक बायोपिक देखने को मिली है। इनमें द लीजैण्ड ऑफ भगतसिंह (2002), नेताजी सुभाष चन्द्र बोसः द फॉरगॉटन हीरो (2005), रंगरसिया (2008), डर्टीपिक्चर (2011), शाहिद (2012), पान सिंह तोमर (2012), भाग मिल्खा भाग (2013), मैरी कॉम (2014), मांझीः द माउन्टेनमैन (2015), अलीगढ़ (2015), बाजीराव–मस्तानी (2015), नीरजा (2016), एम.एस.धोनी. द अनटोल्ड स्टोरी (2016), अजहर (2016), सरबजीत (2016), बुधिया सिंहः बोर्न टू रन (2016), पूर्णाः करेज हेज नो लिमिट (2017), मण्टो (2018), संजू (2018), सूरमा (2018), द शोले गर्ल (2019), सांड की आंख (2019), मणिकर्णिकाः द क्वीन ऑफ झॉसी (2019), राजी (2019), तान्हाजीः द अनसंग वॉरियर (2020), आदि पिछले दो दशकों में बनी प्रमुख बॉयोपिक फिल्में है।

21वीं सदी के पिछले दो दशकों में देश के विभिन्न इलाकों से आयी प्रतिभाओं ने अपनी सृजनशील उपस्थिति से हिन्दी सिनेमा को विविध रूप से समृद्ध किया है। लेकिन हिन्दी सिनेमा में अभी भी मौलिक एवं नये विषयों का अभाव प्रतीत हो रहा है। बड़े फिल्मकारों का ध्यान अभी या तो दक्षिण में बनी हिट फिल्मों के रीमेक खरीदने या फिर बायोपिक बनाने की ओर ही है। ऐसे में डिमांडिग होते जा रहे भारतीय दर्शक, जिसके पास अब फिल्म को स्टार्ट एवं स्टॉप करने की सहुलियत हो गई है, उसकी माँग पूरी करना हिन्दी सिनेमा के समक्ष एक गम्भीर चुनौती है। ओ टी टी (ऑवर–द–टॉप) ने मनोरंजन का परिदृश्य ही बदल दिया है, इस सम्बन्ध में नेटफ्लिक्स इंडिया की वाइस प्रेसिडेंट–कंटेट, मोनिका शेरगिल लिखती है–"2020 में दर्शको ने जिन कहानियों का लुत्फ उठाया, उनके बारे में दो चीजों ने मुझे चकित कर दिया। पहली, लोकप्रिय स्पेनिश सीरिज मनीहाइस्ट भारत में 170 दिनों तक टॉप–10 में रही। और दूसरा, भारत में कोरिया में बनी कहानियॉ देखने में 2019 के मुकाबले 2020 में 370% वृद्धि हुई है। यह भारत में मनोरंजन की जबरदस्त चाहत ही तो है। इससे पता चलता है कि भारतीय दर्शक विभिन्न भाषाओं में दुनिया के अलग–अलग हिस्सों की कहानियों के प्रति कितने उत्सुक है।"[1]

भारत में मनोरंजन की दुनिया अब ओ टी टी प्लेटफॉर्म पर केन्द्रित होती जा रही है। डिज्नी प्लस हॉट स्टार, सोनी लिव, एमएक्स प्लेयर, ऑल्ट बालाजी, नेटफ्लिक्स , अमेजॉन वीडियों प्राइम, जी[5] आदि अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत में दर्शकों को फिल्में और वेब सीरीज उपलब्ध करा कर मनोरंजन का माध्यम बने हुए है। कोरोना काल में भारत में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के दर्शकों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। अकेले नेटफ्लिक्स के ही कोराना काल में भारत में 1 करोड़ सब्सक्राइबर बढे है। एक ओर भारत में बॉलीवुड़ डिजिटल मीडिया से निरन्तर पिछड़ता जा रहा है तो दूसरी ओर हिन्दी में डब की गयी और सबटाइटल्स के साथ मौजूद दक्षिण और हॉलीवुड की फिल्में उसका भारतीय बाजार हथियाने के लिए तैयार खडी है।

एस. शंकर द्वारा निर्देशित तमिल भाषा में बनी फिल्म '2.0' को हिन्दी में डब करके प्रस्तुत किया गया, इस फिल्म ने हिन्दी क्षेत्रों से 140 करोड़ रू. से अधिक कमाई की और ऐसा करके 'बाहुबली 2: द कान्क्लूजन' के बाद दूसरी सबसे अधिक कमाई करने वाली दक्षिण भारतीय फिल्म बन गई।[2] बाहुबली के हिन्दी डब किए गए संस्करण ने कुल 510 करोड़ रू. कमाये और ऐसा करके वह भारत में सबसे ज्यादा कमाई वाली हिन्दी फिल्म बन गई है।[3] सन् 2019 में रिलीज 'एवेंजर्सः एंडगेम' ने भारतीय बाजार में सर्वाधिक कमाई करने वाली हॉलीवुड़ फिल्म के रूप में अपनी पहचान बना ली है। इसने भारतीय बाजार से लगभग साढ़े चार सौ करोड़ की कमाई की है। जबकि 2019 की सबसे अधिक कमाई देने वाली हिन्दी फिल्म 'वॉर' थी, जबकि विश्वव्यापी कमाई लगभग

चार सौ सत्तर करोड़ रूपये थी। जबकि 'एवेंजर्स एंडगेम' की विश्वव्यापी कमाई चौदह हजार करोड़ रूपये से भी ज्यादा थी। एवेजंर्स एंडगेम, बाहुबली–2 का रिकार्ड भी तोड़ चुकी है। भारत में बाहुबली[2] ने दो दिनों में 80 करोड़ रूपये कमाए और 'एंवेजर्स एंडगेम' ने 104 करोड़ रूपये कमाऐं।

हॉलीवुड एक–एक करके अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमाओं को लील चुका है और इस बार उसकी नजर भारतीय सिनेमा विशेषकर बॉलीवुड पर है। अमेरिका कम्पनियों नेटफ्लिक्स, अमेजॉन, हॉटस्टार आदि ने भारतीय दर्शक को ऐसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवा दिये है कि दर्शको को मनोरंजन के लिए मल्टीप्लेक्स या सिनेमा हॉल तक जाने की जरूरत ही ना पड़े। कोरोना कॉल में लॉकडाउन के कारण अनेक फिल्मकारों ने फिल्मों को इन कम्पनियों के जरिये ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया और देखा गया कि इस प्लेटफॉर्म पर रिलीज बड़े–बड़े लोकप्रिय सितारों की फिल्में बुरी तरह पिटी। दूसरी तरफ हॉलीवुड़ उन्नत तकनीक और अपार पूँजी के सहारे ''स्पेक्टेकल फिल्में'' बना रहा है जिनका असली मजा सिर्फ सिनेमा हॉल में देखकर लिया जा सकता है।[4] यानि हिन्दी फिल्मों का आनन्द दर्शक घर में बैठकर ले सकता है और हॉलीवुड़ फिल्मों को देखने कि लिए उसे मल्टीप्लेक्स जाकर जेब ढीली करनी ही होगी।

हिन्दी फिल्मों के लिए गंभीर संकट खड़ा होने वाला है। यदि उसने तकनीक और कंटेंट में सुधार नहीं किया तो विदेशी बाजार मं अपनी जगह बनाना तो दूर रहा उसके लिए अपने सुरक्षित और पारम्परिक भारतीय और मिड़िल ईस्ट के बाजार को बचाना भी मुश्किल होगा। 21वीं सदीं के तीसरे दशक में हिन्दीं फिल्मों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि उन्हे भारत में अपना वर्चस्व बनाए रखते हुए वैश्विक बाजार में भी नयी सम्भावनाऐं तलाशनी है। अभी तक के आंकड़े बताते है कि बमुश्किल 5% विदेशी दर्शक ही हिन्दी फिल्मों में रूचि लेते है।[5] हिन्दी फिल्में विदेशो में सफल होती है वे केवल प्रवासी भरतीयों के कारण होती है जो विश्व के अलग–अलग हिस्सो में फैले है।

हॉलीवुड के पास भारत के समान समृद्ध और सुनहरा सांस्कृतिक अतीत नहीं हैं। उनके पास हमारे समान पौराणिक साहित्य, इतिहास और लोक–कथाओं के रूप में किस्से–कहानियॉ का अपार खजाना भी नहीं है लेकिन वे 'साइंस–फिक्शन' को भी इतनी उच्चतम तकनीक और अपार पूँजी के साथ प्रस्तुत करते है कि सारी दुनिया पर हॉलीवुड की फिल्मों का जबरदस्त दबदबा कायम है। इस स्तर तक आने के लिए हिन्दी सिनेमा को सामान्य प्रेम कहानियों एवं अपराध कहानियों से आगे बढ़ कर नये एवं बेहतर विषय तलाशने होंगे। पौराणिक साहित्य और इतिहास से भी कहानियॉ, विषय लिए जा सकते है। आवश्यकता है इन विषयों को उच्चतम तकनीक, विशाल पूँजी और नवीन दृष्टि के साथ प्रस्तुत करने की । इसके साथ ही यह तथ्य भी ध्यान रखना होगा कि कहानियों को इस अंदाज में प्रस्तुत किया जाये कि विदेशी सिनेमा द्वारा उसका अनुकरण असम्भव हो और ऐसा तभी हो पायेगा जब सिनेमा ऐसी कहानियॉ लेकर आयें, जिनमें हमारी मिट्टी की सौंधी गन्ध हो, संस्कृति की महक हो और जो जड़ो से जोड़ने वाली स्थानीयता में रची–बसी हो। इसके साथ ही जो अपने दौर से आँखें मिलाने वाली और भविष्य पर निगाह रखने वाली भी हो।[6] जो सिनेमा स्थानीयता की खुशबू के साथ आधुनिकता का खूबसूरत तालमेल बना कर चल पायेगा, वही इस ग्लोबलाइजेशन एवं डिजिटल युग में लम्बे समय तक जिन्दा रह पायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मोनिका शेरगिल–दैनिक भास्कर(सुर्खियों से आगे–कॉलम), 4 जनवरी 2021
2. hi.m.wikipedia.org
3. bahubali-2 in the biggest hindi blockbustee-boxofficeindia.com, 8 june 2017
4. मिहिर पंड्या, लेख–सिनेमा की बदलती जमीन, – www.jankipul.com 2-3-2020
5. अजय ब्रह्मात्मज–लेख–भारतीय फिल्मों की विदेशों में सिक्का जमाने की चुनौती NRT, 2-1-2021
6. मिहिर पंड्या, लेख–सिनेमा की बदलती जमीन, –www.jankipul.com 2-3-2020.

❖◆❖